Report on Training Programme on "Rakhi Designing by using Rice Grains"

Department of Rural Technology and Social Development and Skill Development Cell

Date of Event : 22/07/2022 to 31/07/2022

Venue : Department of Rural Technology and Social Development

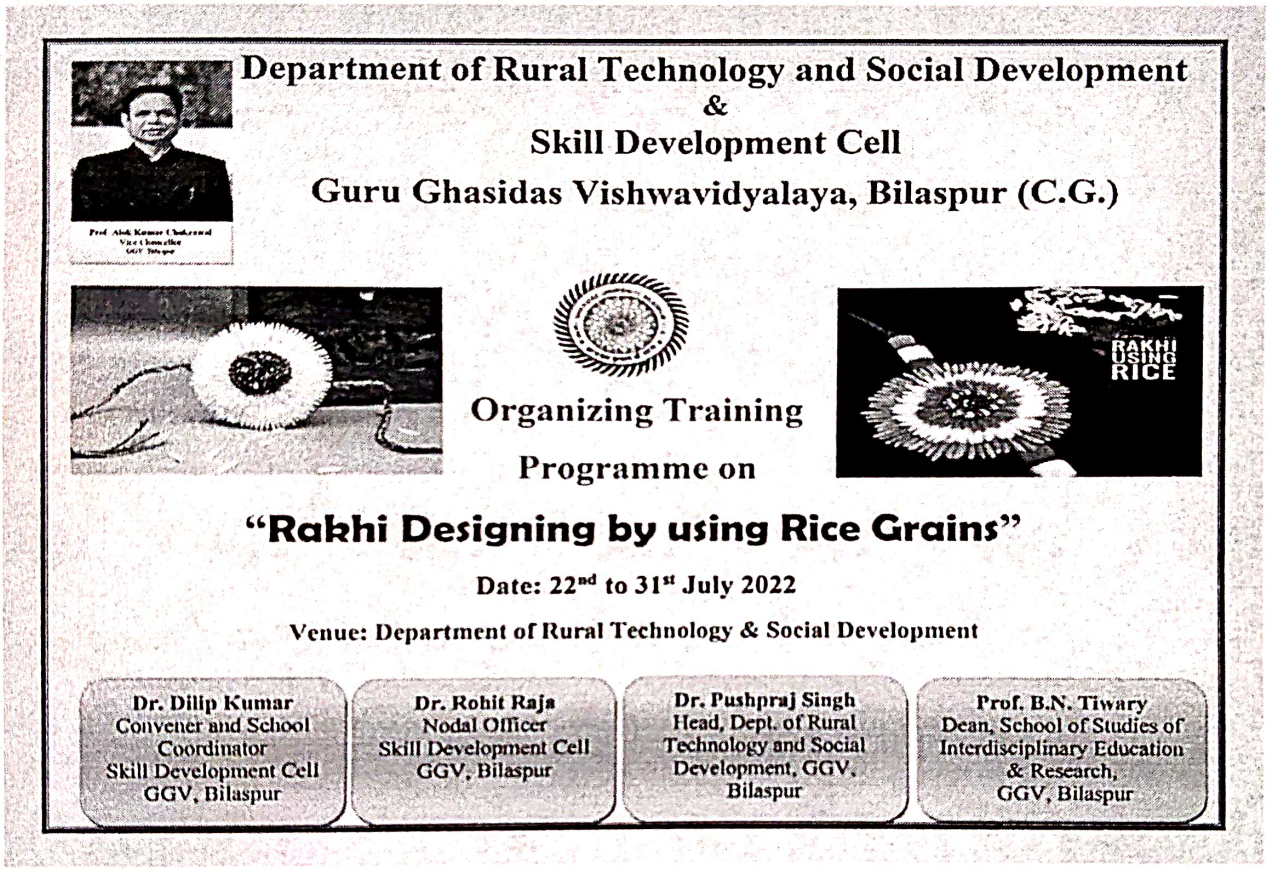

Poster of Rakhi Designing by using Rice Grains

Details of Event Proceedings

Date (DD-MM-YYYY)	Details of the Session	Details of Resource Person	Number of Participants
22-07-2022 to 31-07-2022	Lecture on Related to Rakhi Designing and Production	Mr. Chudamani Suryawanshi	30

A Brief Abstract of the Event (Maximum 500 Words):

रक्षाबंधन • कक्षा के बाद हर दिन छात्र 5 घंटे राखियों को बनाने में दे रहे हैं

30 छात्रों ने बनाई धान व चावल की 4520 राखियां, भाइयों की कलाई पर 11 को सजेंगी

सिटी रिपोर्टर | बिलासपुर

राखी का त्योहार 11 अगस्त को है। बहनें अपने भाइयों के लिए राखियां खरीद रहीं हैं। इसके अलावा अपने पसंद की राखियां भी बहनें बनवा रही हैं। ऐसे में गुरु घासीदास सेंट्रल यूनिवर्सिटी के ग्रामीण प्रौद्योगिकी एंड सामाजिक विकास विभाग के छात्रों ने स्वावलंबी व अर्न वाय लर्न योजन के तहत राखियां बना रहे हैं। छात्र इस बार चावल और धान की राखियां तैयार की जा रहीं हैं। छात्र सुबह 9 से 1 बजे तक क्लास अटेंड करते हैं। इसके बाद वे 1 से 5 बजे तक राखियां बना रहे हैं। ऐसे में अभी तक छात्रों ने 4 हजार 520 राखियां बना चुके हैं। छात्रों ने बताया कि धान व चावल की एक राखी बनाने में उन्हें लेबर चार्ज लेकर 22 रुपए तक खर्च आ रहा है, पर वे इसे 20 रुपए में ही बेच रहे हैं। छात्रों की राखियां सेंट्रल यूनिवर्सिटी के शिक्षक, छात्र और बाहरी लोग भी खरीदने पहुंच रहे हैं। इसके अलावा छात्र इन राखियों को ऑनलाइन भी बेच रहे हैं।

सेंट्रल यूनिवर्सिटी में छात्र धान, चावल व फोटोयुक्त राखी बनाते हुए।

फोटो वाली राखियों के मिल रहे आर्डर

विभागाध्यक्ष डॉ. पुष्पराज सिंह ने बताया कि छात्रों को राखी बनाने में मदद की जा रही है। सहायक प्राध्यापक दिलीप कुमार भी मदद कर हैं। छात्र फोटो वाली राखी भी बना रहे हैं। जिसे अपनी फोटो के साथ राखी बनवानी है, उसे ऑर्डर करना पड़ रहा है। कम से कम 5 राखियां का आर्डर ही स्वीकार किया जा रहा है। फोटो वाली एक राखी की कीमत 70 रुपए है।

छात्रों की 74 हजार फीस जमा

डॉ. सिंह ने बताया कि इसके पहले छात्र वर्मी कंपोस्ट, एलोवेरा का साबुन, हर्बल गुलाल सहित अन्य सामग्री बनाते थे। इससे छात्रों इसे बनाना भी सीखा और इसकी बिक्री 74 हजार रुपए कमाया भी। यह पैसा छात्रों को देने की बजाया 22 छात्रों की सेमेस्टर 74 हजार रुपए फीस जमा की गई है।

राखियों के लिफाफे 10 हजार बिके, कम पड़े तो और मंगाए गए

मुख्य डाकघर में वाटर प्रूफ राखियों के 10 हजार लिफाफे आए थे। एक राखी की कीमत 10 रुपए है। ये राखियां खत्म हो गई हैं। दो दिन लोग वापस जा रहे थे। इसे देखते हुए डाक विभाग ने बुधवार को 1 हजार राखी लिफाफे और मंगवाई। दोपहर से लोगों को राखी के लिफाफे मिलने लगे थे। मुख्य अधीक्षक एके साहू ने बताया कि अभी तक 5 हजार राखियां लोगों ने देश और विदेश में स्पीड पोस्ट किए हैं। पीली पेटियों में जो रखी आ रही है, उसे उसी दिन भेजा जा रहा है।

CULTURE कल्चर 14 पत्रिका patrika.com
बिलासपुर, शनिवार, 20 अगस्त 2022

सीयू : ग्रामीण प्रौद्योगिकी एवं विकास विभाग में प्रशिक्षण कार्यक्रम का समापन

विद्यार्थियों को सही मार्गदर्शन मिले तो स्वावलंबन संभव है-प्रो निलाबंरी दवे

यदि विद्यार्थियों को सही समय पर सही मार्गदर्शन मिले तो विद्यार्थियों में चरित्र निर्माण के साथ-साथ स्वावलंबन संभव है। जब गुरु और शिष्य मिल कर काम करते हैं तो इससे एक अच्छे समाज का निर्माण होता है।

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

बिलासपुर. यह बात सौराष्ट्र विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति प्रो. निलाम्बरी दवे ने गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के अंतर्गत ग्रामीण प्रौद्योगिकी एवं विकास विभाग में आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन समारोह में कही।

प्रो. निलाम्बरी दवे ने उन विद्यार्थियों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया जिन्होंने धान व चावल से राखियां बनायी थीं। उन्होंने छत्तीसगढ़ के विद्यार्थियों को विभिन्न कौशल एवं पारंपरिक कलाओं से पारंगत बताया।

इस अवसर पर ग्रामीण प्रौद्योगिकी विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ पुष्पराज सिंह ने कहा कि गुरु घासीदास विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो आलोक कुमार चक्रवाल के निर्देशन में स्वावलंबी छत्तीसगढ़ के अंतर्गत विभाग के विद्यार्थियों ने अथक परिश्रम कर लगभग पांच हजार राखियां बनायी तथा इसकी मार्केटिंग भी की गयी। इस प्रशिक्षण से प्राप्त धनराशि से 24 बच्चों का अध्ययन शुल्क जमा किया जाएगा।

कार्यक्रम के आयोजक सहायक प्राध्यापक डॉ. दिलीप कुमार ने बताया कि इससे पहले पिछले माह में 22 बच्चों का अध्ययन सह-आय योजना के तहत अध्ययन शुल्क के रूप में 74000 रुपए जमा किए गए हैं। ग्रामीण प्रौद्योगिकी विभाग कौशल

विकास के तहत वर्मी कंपोस्टिंग, मशरूम उत्पादन, हस्त निर्मित साबुन, प्राकृतिक गुलाल के अलावा और भी अनेक प्रकार की गतिविधियां संपादित करता है जिससे छात्र स्वावलंबी बनने की दिशा में कदम बढ़ाते हैं।

समापन समारोह में उपस्थित प्रो. बी.एन. तिवारी, अधिष्ठाता ने कहा कि शिक्षा का महत्व तभी है जब वह आर्थिक संबलता प्रदान करे तथा इस प्रकार की गतिविधियां विद्यार्थियों को स्वावलंबन के लिए प्रेरणादायी हैं। कौशल विकास प्रकोष्ठ के नोडल अधिकारी डॉ. रोहित राजा ने बताया कि इस प्रकार के कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजन से विश्वविद्यालय की साख बढ़ी है तथा अनेक विद्यार्थी इसमें बढ़चढ़ कर हिस्सा ले रहे हैं।

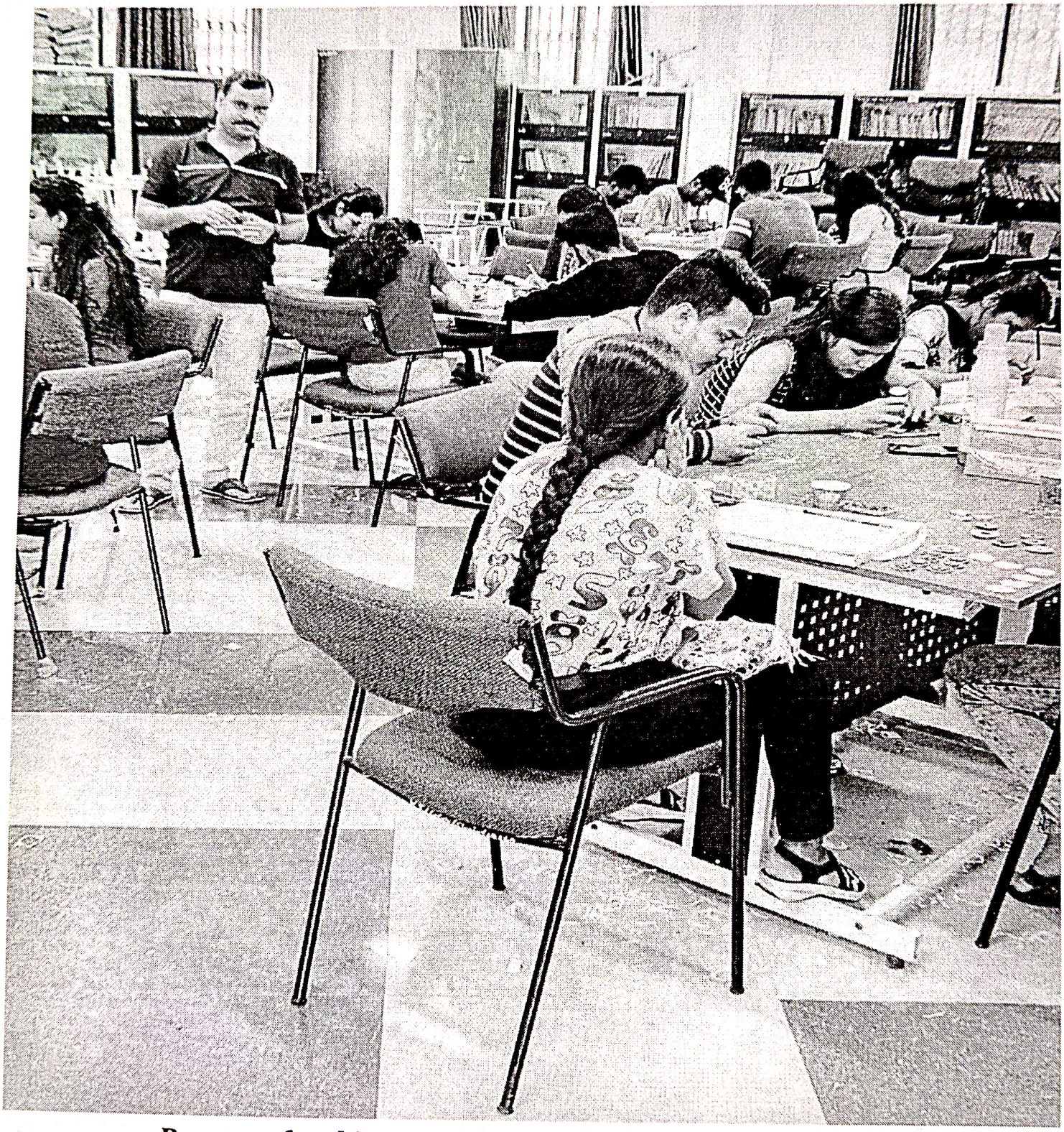

Process of making Rakhi Designing using by Rice Grains